International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)
E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

हिन्दी सिनेमा और उपन्यास में अंतर्सम्बन्ध

डॉ. फेदोरा बरवा

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास. जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं, वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश :–

हिंदी सिनेमा ने सदैव समाज को नई दिशा प्रदान की है। भारत में ऐसी कितनी ही फिल्में हैं जो हिंदी साहित्य पर बनाई गई हैं और दर्शकों ने उन्हें काफी सराहा भी है। हिन्दी उपन्यास पर बनी फिल्में सबसे अधिक दर्शकों के मन को भाया है। क्योंकि यह उपन्यास इतने रोचक ढंग से लिखे गये थे कि पाठकों के हृदय को झकझोर कर रख दिया। यदि इस प्रकार के उपन्यास पर कोई फिल्मांकन करते है और उस फिल्म का अभिनय उतना ही अच्छा होता है तो यह उपन्यास एवं सिनेमा जगत की बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। सिनेमा हिंदी साहित्य एवं उपन्यास से कभी भी अनभिज्ञ नहीं रह पाया है। हिंदी सिनेमा केवल मनोरंजन का पात्र नहीं बना किंतु उसने ऐसी कई भावनाओं को जन्म दिया जिसने एक नए भारत का भविष्य निर्धारित किया। हिंदी साहित्य के धरातल पर उतरी फिल्म न केवल एक फिल्म मात्र होती है अपितु वह एक वासना रहित सरल हृदय की कहानी होती है।

मुख्यशब्द : सिनेमा, उपन्यास, साहित्य, रचनाएँ, समस्याएँ।

प्रस्तावना :–

हिन्दी उपन्यास और सिनेमा का मूल स्वभाव एक–दूसरे से काफी अलग है और यही अलगाव इस रूपान्तरण में बाधा पैदा करता है। उपन्यास / कहानी /नाटक को पटकथा के ढाँचे में फिट करना सबसे बड़े व्यवधान के रूप में सामने आता है। इन समस्याओं से निजात पाने के लिए निर्देशक कभी साहित्य में कुछ जोड़ता तो कभी घटाता है। फिल्मांकन के दौरान उपन्यासों में आये उन परिवर्तनों के कई परिप्रेक्ष्य हो सकते है। स्त्री–परिप्रेक्ष्य से इन परिवर्तनों को देखते हुए यदि हम प्रेमचंद के 'गोदान' पर बनी त्रिलोक जेटली की फिल्म 'गोदान' की बात करें तो पाते हैं कि, 'गोदान' उपन्यास को यदि हम फिल्म में ढूँढते हैं तो हमें निराशा ही हाथ लगेगी। सिनेमा की सीमाओं के कारण 'गोदान' के फलक को निर्देशक ने छोटा कर दिया है। 'गोदान की प्रतिनिधि स्त्री पात्र है धनिया। उपन्यास की ही तरह फिल्म में भी धनिया एक स्पष्टवादी, स्वाभिमानी और पितृसत्तात्मक समाज को चुनौती देने वाला चरित्र है। गलत बात के खिलाफ आवाज़ उठाते हुए उसे ज़रा भी संकोच नहीं होता। धनिया के चरित्र की सुदृढ़ता और अक्खड़ता भले ही तत्कालीन समाज के अनुरूप न हो लेकिन उसकी यह विशेषता अनायास ही नहीं है। प्रेमचंद्र की अग्रचेता दृष्टि आने वाले समय में स्त्री–पुरुष समानता के महत्व को पहचानती है। यही कारण है कि वे अपने उपन्यास की नायिका को एक विशेष सामर्थ्य देते हुए उसे सशक्त बनाते हैं। फिल्म प्रेमचंद्र की ही स्त्री–दृष्टि को पुख्ता करती है। जाहिर है कि त्रिलोक जेटली भी उस पर अपनी फिल्म के द्वारा स्वीकृति की मुहर लगाते हैं।

परन्तु चर्चित उपन्यास और कालजयी रचनाओं पर आधारित फिल्में हर दौर में पसंद की जाती रही है यही वजह है कि निर्देशक और निर्माता उपन्यासों को टटोलना और उन पर फिल्म बनाना प्रारंभ कर दिए है। यह सही भी है इससे वे दर्शक जो उपन्यासों को पढ़ना पसंद करते है वे बड़े परदे पर उस पर आधारित फिल्में देखकर गौरवान्वित होते है इसके अलावा वे दर्शक जिन्हें साहित्य की रचनाओं का ज्ञान नहीं है उनमें साहित्य की समझ बढ़ती है। हमारे यहाँ ज्यादा बड़ी संख्या में हिन्दी उपन्यासों पर फिल्मांकन नहीं हो पाया। सिनेमा की इन सौ सालों में हिन्दी में पाँच हजार से ज्यादा फिल्में बनी परंतु हिन्दी साहित्य कृतियों पर मात्र इकतालिस पर ही फिल्में निर्मित

हो सकी जिसमें उपन्यास पर 18, कहानी पर 20 और नाटक पर 03 फिल्में बनी है। हिन्दी उपन्यास पर आधारित जिन फिल्मों का सफल फिल्मांकन हुआ वे फिल्में है गबन, डाकबंगला, आँधी, मौसम, बदनाम बस्ती, सारा आकाश, सत्ताईस डाउन, तमस, सूरज का घोड़ा और नौकर की कमीज। इसी प्रकार जो असफल रही वे फिल्में हैं गोदान, सेवासदन, रंगभूमि, आपका बंटी, चित्रलेखा, धर्मपुत्र, त्यागपत्र।

हिन्दी उपन्यास पर बनीं कुछ चर्चित फिल्मों की सूची निम्न है :–

देवदास मूलरूप से बांग्ला में लिखित शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास को आधार बनाकर हिन्दी में प्रमथेश बरूआ (1936), विमल राय (1955) और बाद में संजय लीला भंसाली द्वारा फिल्म देवदास का निर्माण हुआ।

- **धर्मपुत्र (1961)**आचार्य चतुरसेन के उपन्यास को आधार बनाकर यश चोपड़ा ने धर्मपुत्र नाम से फिल्प का रूपांतरण किया।
- **साहेब बीबी और गुलाम (1962)** बांग्ला उपन्यासकार विमल मित्र के उपन्यास पर इसी नाम से गुरूदत्त ने फिल्म बनायी, जिसको अबरार अल्वी ने निर्देशित किया।
- **गोदान (1963)**उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की अमर कृति पर आधारित फिल्म का निर्देशन त्रिलोक जेटली ने किया।
- मध्य भारती
- **गाइड (1965)**–मूलरूप से अंग्रेजी में लिखे गये आर. के. नारायण के उपन्यास 'दि गाइड' पर देव आनंद ने हिन्दी में फिल्म का निर्माण किया, जिसे विजय आनंद निर्देशित किया था।
- **गबन (1966)**– मुंशी प्रेमचन्द्र के उपन्यास पर केंद्रित फिल्म का निर्माण ऋषिकेश मुखर्जी ने किया।
- **सारा आकाश (1969)**– हाल में ही दिवंगत कथाकार 'राजेन्द्र यादव' के उपन्यास प्रेत बोलते हैं' के आधार बनाकर निर्देशक बासु चटर्जी ने फिल्म बनायी।
- **रजनीगंधा (1974)**– निर्माता–निर्देशक बासु चटर्जी ने कथा लेखिका मन्नू भण्डारी की कहानी यही सच है' को आधार बनाकर फिल्म बनायी।
- **आंधी (1975)**– कमलेश्वर के ही एक अन्य उपन्यास 'काली आंधी' को केन्द्र में रखकर गुलजार ने फिल्म बनायी।
- **सूरज का सातवां घोड़ा (1992)**– धर्मवीर भारती के उपन्यास पर निर्देशक श्याम बेनेगल ने नाम से फिल्म बनायी।
- **थ्री इडियट्स (2009)**– निर्देशक राजकुमार हिरानी ने चर्चित लेखक चेतन भगत के उपन्यास 'फाइव प्वाइंट समवन' पर आधारित फिल्म का निर्माण किया।

निष्कर्ष :–

सिनेमा और साहित्य का धरातल अलग–अलग है। सिनेमा शुध्द मनोरंजन प्रधान होता है जिसमें दर्शकों के मांग का ख्याल रखा जाता है, दर्शक को जो चाहिए फिल्म उद्योग वहीं परोसता है जिसका सीधा संबंध व्यवसाय से होता है, जबकि साहित्य, संवेदना और अनुभूति प्रधान होता है. दर्शकों के मांग पर नहीं बल्कि साहित्यकार अपनी निजी संवेदना और अनुभूति को केंद्र में रखकर समाज के यथार्थ रूप को सामने लाने का प्रयास करता है। कुछ मौलिक आधुनिक हिंदी उपन्यासों पर फिल्मांकन हुआ है। लेकिन साहित्य कृतियों पर हुए फिल्मांकन, संख्या में बहुत ही कम है। आज उत्कृष्ट हिंदी साहित्यिक कृतियों का अधिकाधिक रूप से फिल्मांकन करने की आवश्यकता है। यह इसलिए जरूरी है कि साहित्य में हमारी सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक विरासतें छिपी होती हैं, जिन्हें निर्देशक बेहतर फिल्मों के माध्यम से आगामी पीढ़ियों तक पहुँचा सकते हैं।

हिन्दी उपन्यास और सिनेमा जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण कलारूपों पर शोधकार्य हिन्दी में अभी भी विरल ही हैं हिन्दी में इस प्रकार के शोधकार्य की आवश्यकता को ध्यान में रखकर हिन्दी उपन्यास और सिनेमा के स्वरूप एवं महत्व पर प्रकाश डालते हुए फिल्मांकन में आनेवाली समस्याएँ और उन समस्याओं का फिल्म निर्देशकों द्वारा उचित समाधान का अध्ययन इस शोधकार्य के अंतर्गत किया जायेगा। हमारे अधिकाँश फिल्मकारों का यह मानना रहा है कि चूँकि सिनेमा का मूल उद्देश्य जनता का मनोरंजन करना है। अतैव साहित्यिक कृतियों के जरिये दर्शकों की अपेक्षाओं को पूरा करना कठिन हो जाता है। इसके बावजूद भी अनेक प्रबुद्ध और सजग फिल्मकारों ने समय–समय पर नामी लेखकों की साहित्यिक कृतियों व रचनाओं को आधार बनाकर सफल फिल्मों का निर्माण किया।

चूँकि फिल्म एक ऐसा माध्यम है जो जन–जन से जुड़ा है, इसलिए फिल्मकारों साहित्यिक कृतियों को फिल्माने में थोड़ी–बहुत छूट भी ली है। कई बार लेखकों ने अपनी कृतियों के साथ खिलवाड़ करने के आरोप भी लगाया है, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि फिल्म के माध्यम से साहित्यिक रचनाओं को बड़े पैमाने पर पहचान भी मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1ण तोंडे, रामदास नारायण (2014) "आधुनिक हिन्दी साहित्य और फिलमांकन स्वरूप एवं
2ण समस्याएँ" डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठावाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद।
3ण तिवारी, सचिन (2017), "साहित्य और सिनेमा अंर्तसंबंध, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय उ.प्र.
4ण डेविड मैमेट, थियेटर, फेबर एंड फेबर, 2010।
5ण सैमुएल बैकेट, वेटिंग फॉर गोडो।
6ण होमर, ओडिसियस, रैंडम हाउस, द मॉडर्न लाइब्रेरी, 1950, यू.एस.ए., अनुवाद– एच. एस. बुचर और ऐंड्रयू लैंग।
7ण डेबोराह कार्टमेल और इमेल्डा वेलेहान, सं. एडैप्टेशंस फ्रॉम टेक्स्ट टू स्क्रीन, स्क्रीन टू टेक्स्ट, 1999, लंदन रटलेज।
8ण घई, सुमन कुमार (2017). "अन्तरजाल पर साहित्य–प्रेमियों की विश्राम स्थली" प्ैछ 2292– 9754
9ण क्षीरसागर, डॉ. गोकुल, "सिनेमा और फिल्मांतरित हिन्दी साहित्य"